शिष्यानुवाच चाङ्गय सर्वानेव तु तद्दचः । सर्वानृषीनानयधं समुपेत्याज्ञया मया ॥

Str. 8. b. Gorr. तद्मे भवद्गिगवेयं यथा प्रोत्तमशेषतः ।

Str. 11. b. नहाद्य. Schlegel macht bei der Uebersetzung folgende Anmerkung: «Mahodaja, i. e. magnus oriens. Res est prorsus inexspectata, quod hoc cognomen, nusquam in toto carmine obvium nisi hic et infra dist. 15. (auch Dist. 20. und IX. 1.) pro Vasishthae nomine proprio substituitur. Num poëta alludit ad aliquod Vedorum dictum?»

Str. 14. b. Gorr. पातितास् st. पालितास्

Str. 20. a. Gorr. महोदयम्र डर्ब्डिइडएं मां प्रह्रषयन् ।

Str. 21. a. प्राणातिपात Gorr., Schl. प्राणानिपात gegen das Metrum.

KAPITÉL X.

Str. 10. b. Man bemerke, dass das Object des Nom act. im Acc. steht. Vgl. zu XII. 14. — Lassen, Anthol. S. 24. Z. 9. भार्यामुत्था- पनाय und S. 25. Z. 15. सापि मृतकमालिङ्गनं करोति। — Gorr. चकारा- वाकृनं यज्ञे भागार्थं त्रिदिवाकसां।

Str. 11. a. नाम्यगच्छन् Gorr., Schl. gegen das Versmaass: ना-

Str. 12. b. Gorr. ऊर्जितस्य st. स्वार्जितस्य 1

Str. 18. b. und 19. a Gorr.

उपाक्रोशस्त पाक्तीति विश्वामित्रमवाकिश्राः । तच्यवा वचनं तस्य पाक्तीति पतता दिवः ॥

Str. 28. Schl. धारिष्यति । Gorr.

यावलोका धरिष्यति तावत्स्यास्यत्यमूनि तु ।

रता प्रतिज्ञां सर्वे मे समनुज्ञातुमर्ऋष ॥

Str. 30. b. রারবালন. Vgl. S. 288. in der Note. Gorr. liest রবালন, im Uebrigen aber weicht er sehr ab.